स्नातक प्रतिष्ठा - द्वितीय वर्ष

मातृको पत्र

दिनांक - 27-4-2020

प्रश्न - 'अजातशत्रु' नाटक का उद्देश्य क्या है?

उत्तर :- विद्यार्थियों मैं बता दूँ कि जयशंकर प्रसाद का नाम तुमने सुना होगा एक कवि के रूप में। परंतु मैं ये बता दूँ कि जयशंकर प्रसाद जी जितने बड़े कवि थे उतने बड़े नाटककार भी थे और उतने ही बड़े कहानीकार और उपन्यासकार और निबंधकार भी थे। आज मैं बात करूँगा स्नातक प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में निर्धारित जयशंकर प्रसाद की कृति अजातशत्रु के प्रश्नों पर विचार करेंगे। पहला प्रश्न उठता है कि इस नाटक की रचना किस उद्देश्य से की गयी थी।

मैं बता दूँ कि जयशंकर प्रसाद के नाटक किसी न किसी उद्देश्य को लेकर लिखे गये हैं। यह रचना 'अजातशत्रु' नाटक भी एक महान उद्देश्य को लेकर लिखा गया है। उनके नाटकों में एक ओर सांस्कृतिक चित्रण की बात

रहती है और दूसरी ओर सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना भी उनमें होती है। इसी नाटक के नायक में भी यह भावना देखने को मिलती है। प्रसाद जी यह नाटक बौद्ध सांस्कृति के उद्गमकाल को लेकर लिखा गया है। यह रचना उस काल की है जब बौद्ध दर्शन की संस्कृति के प्रति लोगों में तिरस्कार, भय और घृणा की भावना भरी हुई थी, लेकिन अजातशत्रु के प्रयास से बौद्ध संस्कृति की विजय होती है। हम कह सकते हैं कि नाटककार का उद्देश्य रहा है तत्कालीन बौद्ध संस्कृति के उदय, उसकी प्रतिक्रिया का चित्रण वे करते हैं। प्रसाद जी इस कार्य में पूर्णतः सफल हुए हैं।

नाटक में पात्र दो वर्गों में बंटे दिखाई देते हैं, एक वर्ग अहिंसक भावना को लेकर चलता है, दूसरा वर्ग हिंसक भावना को लेकर चलता है, इन दोनों वर्गों में संघर्ष समस्त राष्ट्र में दिखाई पड़ता है। बिम्बसार, जीवक, पद्मावती, और मल्लिका

अहिंसा की आदर्शों को लेकर चलते है, गौतमबुद्ध के चरणचिह्नों पर चलते हैं। गौतम बुद्ध को आनंद उनके आदर्शों को अंत तक वे उसी रास्ते पर चलते रहते हैं। दूसरे वर्ग के पात्रों में अजातशत्रु, उदयन, प्रसेनजित, विरूद्धक, देवदत्त, छलना, मागन्धि आदि आते हैं। दूसरे वर्ग के पात्र पहले वर्ग के पात्रों से संघर्ष करते हैं किन्तु अंत में पराजय उन्ही की होती है। इस दूसरे वर्ग के पात्र आत्महत्या कर लेते हैं या दुर्दशा को प्राप्त होते हैं या बाद में अपने आपको बदल लेते हैं। छलना और अजातशत्रु ने अपने जीवन की दिशा को बिल्कुल दूसरी दिशा की ओर मोड़ दिया था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अजातशत्रु नाटक उनके अन्य ग्रंथों से कम महत्वपूर्ण एवं आदरणीय नहीं है। कुमार रजनीकान्त रंजन

२२-५-२०२१